

हिन्दू धर्म में जातिभेद

हिन्दू धर्म में जातिभेद का रहस्यो
--प्रोज्ज्वल मंडल

हिंदू धर्म में जाति भेद जन्म के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर होता है और इसका उल्लेख शास्त्रों में मिलता है।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरु पादाऽउच्येते ॥१०॥

ब्राह्मणो ऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत ॥११॥

यजुर्वेद_अध्याय_31_मंत्र_10-11

ऋग्वेद मंडल_10_सूक्त_90_मंत्र-11-12

पदार्थः (अस्य) उस परमात्मा (ब्राह्मण) की रचना में वेदों को जानने वाला और ईश्वर का उपासक ब्रह्म (चेहरा) चेहरे के बराबर (अनंत) हो जाता है। (भुजा) भुजा के समान बल ने पराक्रमी (राजन्यः) क्षत्रिय (कृतः) की रचना की है। (यत) जो (उरु) उरु की तरह बेदयगागी करता है, (तब) वह व्यक्ति (अस्य) इस परमात्मा (वैश्यः) को वैश्य के रूप में जानता है। (एडम) समान परिश्रमी और अहंकार रहित, सेवा के योग्य (शूद्र) व्यक्ति शूद्र कहलाता है। (अज्ञात) इस तरह से सभी की उत्पत्ति हुई है।

अर्थः वह व्यक्ति जो वेद विद्या शाम-दमदि उत्तम गुण का मुखिया है, ब्रह्म को जानने वाला और मुख से संसार को ज्ञान देने वाला है। वह एक ब्राह्मण है। जो शक्तिशाली भुजा की तरह काम करता है वह क्षत्रिय है, जो प्रयोग में कुशल है, जो दुनिया को जांघ की तरह रखता है, जो वैश्य है, और जो सेवा में कुशल है, जो कर्म में कठोर है। जो शूद्र की तरह मेहनती है। यह जाति व्यवस्था वेदों में कर्म के अनुसार बोली जाती है।

जनमना जयते शूद्रः संस्कारादिज उच्यते।

वेद - पाठ भावेत् बिप्रा ब्रह्म जानति ब्राह्मणः..'

'जन्म' - शूद्रत्व, संस्कार - द्विज, 'वेद - पथ' से - विप्रत्व और ब्रह्मज्ञान से - ब्राह्मणवाद प्राप्त होता है।

यथा षण्ढोऽफलः स्त्रीषु यथा गौर्गवि चाफला ।

यथा चाज्ञोऽफलं दानं तथा विप्रोऽनृचोऽफलः ॥ १५८ ॥

मनुस्मृति 2 अध्याय ॥_श्लोक 158

भावार्थ : जिस प्रकार एक किन्नर स्त्री के लिए अनुपयोगी होता है, जिस प्रकार एक मादा गाय दूसरी मादा गाय के लिए अनुपयोगी होती है और अज्ञानी को दान देना विफल हो जाता है, वैसे ही वैदिक अध्ययन से वंचित ब्राह्मण बेकार या बेकार है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम् ।

क्षत्रियाज् जातमेवं तु विद्याद् वैश्यात् तथैव च ॥ ६५ ॥

मनुस्मृति - अध्याय -10_श्लोक_65

• अनुवाद- यदि कोई व्यक्ति शूद्र के तट पर पैदा हुआ है और उसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य के गुण हैं, तो वह ब्राह्मण क्षत्रिय या वैश्य होगा। इसी तरह, यदि कोई ब्राह्मण क्षत्रिय या वैश्यकुल में पैदा हुआ है और उसमें शूद्र के गुण हैं, तो वह शूद्र होगा। यानी जो चार अक्षरों के समान होगा वह उस अक्षर का होगा।



COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

**Icreator of
hinduism
server!**

KAPWING

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः ।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः ॥ २८ ॥

मनुस्मृति - अध्याय 2 श्लोक_28

अनुवाद - इस शरीर को वेदों के अध्ययन और शिक्षा, हेम और पंच महायज्ञ करने, धर्म के अनुसार संतान पैदा करने आदि से ब्रह्म बनाया जा सकता है।

हम में से कोई भी जन्म से ब्राह्मण या क्षत्रिय नहीं है। सभी लोगों को राष्ट्र के वेदों का पालन करना चाहिए और दूसरों को वेदों के अनुसार निर्देशित किया जाना चाहिए।

गीता में भी यही कहा गया है-

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥

..गीता 4 | 13 श्लोक

अर्थ; प्रकृति के तीन गुणों और कार्यों के अनुसार, मैंने मानव समाज में चार जातियों का निर्माण किया है। भले ही मैं इस अभ्यास का निर्माता हूँ, आप मुझे अकर्ता और अव्यय के रूप में जानेंगे

॥ Om शांतिः Om शांतिः Om शांतिः ॥